सम्पादक—
ठाकुर श्रीनाथ सिंह

देशबन्धु

वार्षिक मूल्य ६)
छः मास का ३)
तीन मास का २)

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

वर्ष १] प्रयाग, शुक्रवार ता० ८ अक्टूबर सन् १९२६ ई० [संख्या

समाचार

स्वराजियों के चुनाव सम्बन्धी दौरे

मिस्टर ... सत्यमूर्ति ८ अक्टूबर को बनारस से उत्तरीय प्रान्त में दौरा आरंभ करेंगें। ९ ता० को लखनऊ में, १० को

दा[illegible] के दं[illegible] का मुकदमा

पुलिस सु[illegible]रिंटेंडेंट और कोतवाल का बयान

मेयोहाल में ५ ता: को मि० ए० आई० जिले डिपटी माजिस्ट्रेट के अदालत में गिरफ्तार किये हुये ३४ मुसलमानों का मुकदमा

७० आदमी के करीब इकट्ठे थे। मौलाना विलायत हुसेन और और मुहम्मद फाखिर भी [illegible] थे। कुछ मुसलमान नेता भी नीचे

फिर वे कोतवाली को लौट गये। जिरह किये जाने पर उन्होंने कहा कि हिन्दुओं की तरफ से कोई [illegible]दती नहीं देखी गई। साधुओं

मिस्टर [illegible] सत्यमूर्ति ८ अक्टूबर को बनारस से उत्तरीय प्रान्त में दौरा आरंभ करेंगे। ६ ता० को लखनऊ में, १० को कानपुर में, ११ को आगरा में, १२ को अलीगढ़ में, १३ को बरेली में और १४ को मेरठ में व्याख्यान देंगे। इसके उपरान्त वे बाबू मोहन लाल सक्सेना को साथ लेकर पंजाब में दौरा करने चले जायेंगे।

आगरे की रामलीला

रामलीला का अपूर्व समारोह जिसमें राम चन्द्र जी की बरात निकली देखने योग्य था। बड़ी भारी तादाद में जनता इसके साथ थी। शहर भर में मस्जिदों से होकर गुजरी। सुपरिन्टेन्डेन्ट और शहर कोतवाल अपने सिपाहियों के साथ उपस्थित थे।

अजमेर हिन्दू सभा का वार्षिकोत्सव

२६ ता० को हिन्दू सभा का वार्षिकोत्सव शान से खतम हुआ। चार रोज तक जनता बड़ी संख्या में स्वामी सत्यदेव के व्याख्यान को सुनती रही। [illegible] इत्यादि खेल [illegible] इनाम [illegible]

स्वराजियों का [illegible] सम्बन्धी दौरा

आनरेबुल सेठ गोविन्द दास, पं० माखन लाल चतुर्वेदी और पं० द्वारिका प्रसाद मिश्र खाण्डवा को पधारे। वे लोग निमार जिले के खास २ स्थानों में काँगरेस की ओर से चुनाव के सम्बन्ध में गये।

सी० पी० कौंसिल का चुनाव

स्वतन्त्र कांगरेस दल की नाउम्मेदी

प्रान्तीय काँगरेस कमीटी सी० पी० (हिन्दी) के सिक्रेटरी तार द्वारा सूचित करते हैं कि स्वतन्त्र काँगरेस दल वाले यहाँ

मेयोहाल में ५ ता: को मि० ए० आई० जिल डिपटी मजिस्ट्रेट के अदालत में गिरफ्तार किये हुये ३४ मुसलमानों का मुकदमा पेश हुआ। बहुत से मुसलमान अदालत की कारवाई देखने के लिये जमा थे। मि० मुहम्मद हुसेन, जहूर अहमद, शफी उल्ला खाँ और कई आदमी मुकदमे की पैरवी कर रहे थे। अलीगढ़ के मि० [illegible] हुसेन भी मौजूद थे मिस्टर एस० पी० ओझा सरकार [illegible] पुलिस सरकार की तरफ से पैरवी कर रहे थे। पहले पहल मि० हालिंस सुपरिन्टेन्ड पुलिस की गवाही हुई। दल के मुतल्लिक जो इन्तजाम उन्होंने किया था उसको कह कर सुआती मस्जिद के वाकिये को बयान किया। यह इस प्रकार है। "जब दल कीटगंज से ४-३५ पर रवाना हुआ तो सब इन्तजाम देख भाल कर आप कोतवाली को चले आये। वहाँ से एक दारोगा पांच हेडकांस्टिबिल पचास आर्मपुलिस शुआती मसजिद को भेजे गये। वहाँ वे खड़े कर दिए गये। आप भी मस्जिद के नीचे खड़े थे। उसमें ७० आदमी के करीब इकट्ठे थे। मौलाना विलायत हुसेन और और मुहम्मद फाखिर भी उसमें थे। कुछ मुसलमान नेता भी नीचे खड़े थे। उसमें मि० जहूर अहमद और अब्दुल कयूम खाँ और फजल इलाही मुख्य थे। मस्जिद के करीब दल ६-१४ पर पहुँचा अजान का समय ६-२८ का था। पूरा दल निकल गया था उसके पीछे का हिस्सा बाकी रह [illegible] मस्जिद अभी अजान के लिये [illegible] मे ईंटे और जूते ऊपर से फेंके गये। सुपरिंटेन्डेन्ट साहब ने ऊपर जाकर देखा और मि० जहूर अहमद से सब का नाम लिखने को कह नीचे इसलिये चले आये कि अन्य स्थानों में झगड़ा फैलने से रोकें। सब्जी मंडी से भी ईंटे आती देखी गयीं। वह मंडी में घुसना चाहते थे पर फाटक बन्द था जब तक फाटक हटाया जाय तब तक खिड़की से लोग कूद कर भाग गये। फिर चारों तरफ पुलिस तैनात कर दी गई कि हिन्दू लोग मस्जिद के ऊपर हमला न करें। चारो तरफ गस्त करके फिर वे कोतवाली को लौट गये। जिरह किये जाने पर उन्होंने कहा कि हिन्दुओं की तरफ से कोई ज्यादती नहीं देखी गई। साधुओं ने जोर से जय की आवाज़ मस्जिद के सामने नहीं की। आर्डर के हिसाब से उन्होंने हिन्दुओं को दल निकालने के लिये हुक्म दे दिया था। प्राईवेट तौर से उन्होंने हिन्दुओं को मस्जिद के समाने बाजा बजाने के वास्ते [illegible] कहा था।

कोतवाल साहब ने अपने बयान में कहा कि चौकियाँ निकल गई थीं। साधु लोग मस्जिद के सामने खड़े थे। उनकी घड़ी के हिसाब से ६-१६ हो चुका था। मस्जिद से आवाज़ आई कि बाजा बन्द करो। इतने ही में झाँझ और ईंटे ऊपर से फेंकी जाने लगी। एक लड़का १२ साल जमानत पर छोड़ दिया गया है। और मजिस्ट्रेट साहब ने अभियुक्तों को रिश्तेदारों द्वारा लाई हुई चीजों को खाने की इजाजत नहीं दी क्योंकि झूँसीके मुकदमेमें भी अभियुक्तोंको इजात नहीं मिली थी।

—०—

हिन्दोस्तां हमारा

अब हाल हो गया क्या ऐ बागवाँ हमारा,
रश्के जिना कभी था हिन्दोस्ताँ हमारा।
आगे निकल गये हैं जापानो मिश्र वाले,
पीछे पड़ा हुआ है क्यों कारवाँ हमारा॥
सब लोग जानते हैं सब लोग मानते हैं,
सारे जहान में है रोशन बयाँ हमारा।
किसको सुनायें जाकर सुनता नहीं है कोई,
तकलीफ़ से भरा है सारा बयाँ हमारा॥
एख़लाक़ हमसे सीखा, तहज़ीब हमसे सीखी,
एहसान मानता है सारा जहाँ हमारा।
कब तक यूँ ही रहें हम किस दिल से गम सहें हम,

प्रतियोगी सहयोगियों को सी० पी० में नाउम्मेदी

मिस्टर एस० एन० जोशी खांडवा से २ अक्टूबर को सूचित करते हैं कि अगर लाला जी और मालवीय जी दौरा नहीं करेंगे तो आगामी कौंसिल में भी मिनिस्ट्री नहीं रहेगी। मिस्टर अभयंकर का चुनाव डाक्टर मुंजे के खिलाफ सन्देह जनक हो तथापि स्वराज्य पार्टी के मेम्बरों की ज्यादा उम्मेद पाई जाती है। बहुत से प्रभावशाली मारवाड़ी काँगरेस उम्मेदवार [illegible] हैसियत से मि० एनी के खड़े हुए आदमियों के विरुद्ध खड़े हो रहे हैं। बरार प्रतियोगी सहयोगियों का केन्द्र था वह भी अब उनके हाथ से निकल चला है। इस दल के बड़े २ नेताओं को चाहिये कि इसकी तरफ जल्द ध्यान दें वरना हमेशा के लिए उनके पाँव

रामलीला का अपूर्व समारोह जिसमें राम चन्द्र जी की बरात निकली देखने योग्य था। बड़ी भारी तादाद में जनता इसके साथ थी। शहर भर में मस्जिदों से होकर गुजरी। सुपरिन्टेन्डेन्ट और शहर कोतवाल अपने सिपाहियों के साथ उपस्थित थे।

अजमेर हिन्दू सभा का वार्षिकोत्सव

२६ ता० को हिन्दू सभा का वार्षिकोत्सव शान से खतम हुआ। चार रोज तक जनता बड़ी संख्या में स्वामी सत्यदेव के व्याख्यान को सुनती रही। [illegible] इत्यादि खेल [illegible] इनाम [illegible]

स्वराजियों का [illegible] सम्बन्धी दौरा

आनरेबुल सेठ गोविन्द दास, पं० माखन लाल चतुर्वेदी और पं० द्वारिका प्रसाद मिश्र खाण्डवा को पधारे। वे लोग निमार जिले के खास २ स्थानों में काँगरेस की ओर से चुनाव के सम्बन्ध में गये।

सी० पी० कौंसिल का चुनाव

स्वतन्त्र कांगरेस दल की नाउम्मेदी

प्रान्तीय काँगरेस कमीटी सी० पी० (हिन्दी) के सिक्रेटरी तार द्वारा सूचित करते हैं कि स्वतन्त्र काँगरेस दल वाले यहाँ पर बहुत प्रयत्न करते रहे है कि काँगरेस के उम्मेदवारके विपक्ष में किसी योग्य व्यक्ति को खड़ा करें पर अब तक वे सफली भूत नहीं हुये। कुछ आदमियों की उन्हें आशा हो गई थी कि वे स्वराज्य पार्टी को त्याग कर स्वतन्त्र दल में सम्मिलित हो जावेंगे पर इसमें भी वे निराश हो गये। अब उनको फिर वही कठिनाई उपस्थित हो गई।

न्स्पेक्टर पुलिस सरकार की तरफ से पैरवी कर रहे थे। पहले पहल मि० हालिंस सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस की गवाही हुई। दल के मुतल्लिक जो इन्तजाम उन्होंने किया था उसको कह कर सुआती मास्जिद के वाकिये को बयान किया। वह इस प्रकार है। जब दल कीटगंज से ४-३५ पर रवाना हुआ तो सब इन्तजाम देख भाल कर आप कोतवाली को चले आये। वहाँ से एक दारोगा पांच हेडकांस्टिविल पचास आर्मपुलिस शुआती मसजिद को भेजे गये। वहाँ वे खड़े कर दिए गये। आप भी मास्जिद के नीचे खड़े थे। उसमें बाजा था। इतने ही में ईंटे और जूते ऊपर से फेंके गये। सुपरटेन्डेन्ट साहब ने ऊपर जाकर देखा और मि० जहूर अहमद से सब का नाम लिखने को कह नीचे इसलिये चले आये कि अन्य स्थानों में झगड़ा फैलने से रोकें। सब्जी मंडी से भी ईंटे आती देखी गयीं। वह मंडी में घुसना चाहते थे पर फाटक बन्द था जब तक फाटक हटाया जाय तब तक खिड़की से लोग कूद कर भाग गये। फिर चारों तरफ पुलिस तैनात कर दी गई कि हिन्दू लोग मस्जिद के ऊपर हमला न करें। चारो तरफ गस्त करके

कोतवाल साहब ने अपने बयान में कहा कि चौकियाँ निकल गई थीं। साधु लोग मस्जिद के सामने खड़े थे। उनकी घड़ी के हिसाब से ६-१६ हो चुका था। मस्जिद से आवाज आई कि बाजा बन्द करो। इतने ही में झंझर और ईंटे ऊपर से फेंकी जाने लगी। एक लड़का १२ साल जमानत पर छोड़ दिया गया है। और मजिस्ट्रेट साहब ने अभियुक्तों को रिश्तेदारों द्वारा लाई हुई चीजों को खाने की इजाजत नहीं दी क्योंकि झूँसीके मुकदमेमें भी अभियुक्तोंको इजात नहीं मिली थी।

—o—

हिन्दोस्ताँ हमारा

अब हाल हो गया क्या ऐ बागवाँ हमारा,
रश्के जिना कभी था हिन्दोस्ताँ हमारा।
आगे निकल गये हैं जापानो मिश्र वाले,
पीछे पड़ा हुआ है क्यों कारवाँ हमारा॥
सब लोग जानते हैं सब लोग मानते हैं,
सारे जहान में है रोशन बयाँ हमारा।
किसको सुनायें जाकर सुनता नहीं है कोई,
तकलीफ़ से भरा है सारा बयाँ हमारा॥
एख़लाक़ हमसे सीखा, तहज़ीब हमसे सीखी,
एहसान मानता है सारा जहाँ हमारा।
कब तक यूँ ही रहें हम किस दिल से ग़म सहें हम,
आख़िर कुसूर कोई ऐ आसमाँ हमारा॥
'बिसमिल' यहीं रहेंगे 'बिसमिल' यही कहेंगे,
बढ़ कर बेहिश्त से है हिन्दोस्ताँ हमारा॥

—'बिसमिल' प्रयाग।

प्रतियोगी सहयोगियों को सी० पी० में नाउम्मेदी

मिस्टर एस० एन० जोशी खांडवा से २ अक्टूबर को सूचित करते हैं कि अगर लाला जी और मालवीय जी दौरा नहीं करेंगे तो आगामी कौंसिल में भी मिनिस्टरी नहीं रहेगी। मिस्टर अभयंकर का चुनाव डाक्टर मुंजे के खिलाफ सन्देह जनक हो तथापि स्वराज्य पार्टी के मेम्बरों की ज्यादा उम्मेद पाई जाती है। बहुत से प्रभावशाली मारवाड़ी काँगरेस उम्मेदवार का हैसियत से मि० एनी के खड़े हुए आदमियों के विरुद्ध खड़े हो रहे हैं। बरार प्रतियोगी सहयोगियों का केन्द्र था वह भी अब उनके हाथ से निकल चला है। इस दल के बड़े २ नेताओं को चाहिये कि इसकी तरफ जल्द ध्यान दें वरना हमेशा के लिए उनके पाँव की उखड़ जावेंगे।

बंगाल की गवर्नरी

विश्वस्त रूप से पता चला है कि लार्ड लिटन के जगह पर मि० राइट आनरेबुल एफ० एस० जैकसन गवर्नर होंगे।

उड़ाकू कोबहम

मिस्टर एलन कोबहम को लण्डन से नाइट हुडकी पदवी मिली है।

प्रयाग, शुक्रवार ८ अक्टूबर १९२६ ई०

...धु है वही देश के लिए जिए जो।
...धु है वही देश हित जहर पिए जो॥
...बन्धु है वही देश का दुख पहिचाने।
देशबन्धु है वही देश को ईश्वर माने॥

सिर पर दुम की चढ़ाई

—○:*:○—

कहते हैं एक बार साँप की दुम यह सोचने लगी कि यह उचित नहीं है कि शिर सदैव आगे रहे और उसे हमेशा पीछे पीछे घसीटना पड़े। पीछे रहना एक अपमान की बात है संसार में कोई पीछे नहीं रहना चाहता इसलिए वह भी आगे बढ़ेगी। शिर ने उसे समझाया कि देखो तुम्हारे आँखें नहीं हैं। तुम ठीक रास्ता नहीं देख सकती हो। और यदि अटकल से तुमने रास्ता तलाश भी लिया तो तुम आगे बढ़ न सकोगी क्योंकि तुम्हारे लिए कोई रास्ता खाली नहीं कर

प्रकार के कष्टों का सामना पड़े वे कभी घबड़ा नहीं सक... अन्य दलों में ये गुण नहीं हैं और न ... गुणों की परवाह ... करते हैं। उनमें राजा बाबुओं की सं... अधिक है। ... कुर्सियाँ तोड़ने के सिवाय और भी कुछ कर सकते हैं या नहीं इसमें भी सन्देह है।

राजनीति कोई खिलौना नहीं है। यह है संग्राम भूमि। इसमें वीर और साहसी सिपाहियों की आवश्यकता है। ऐसे सिपाही हमें जहाँ से मिलें वहीं से लेना चाहिए।

लाला जी की नीति

पंजाब के युवकों की अपील

—○:o:○—

पंजाब के १६ प्रसिद्ध त्यागी और वीर नवयुवक कार्यकर्ताओं ने भारतीय युवकों के नाम एक महत्व पूर्ण अपील प्रकाशित की की है। इस अपील में लाला जी की वर्तमान राजनीतिक के प्रति असंतोष प्रकट करते हुए युवक दल से प्रार्थना की गयी है कि भारत माता के उद्धार के लिये आगे बढ़ें—

भाइयो! इस समय हम विकट राजनीतिक परिस्थिति में हैं। जो स्वराज्य प्राप्ति के सम्बन्ध में राष्ट्र की आशाओं के आधार समझे जाते थे; जो स्वाधीन सेना की पताका उठाने वाले माने जाते थे; आज वे ही एक एक करके राष्ट्र का साथ छोड़ रहे हैं। राष्ट्रीय सेना में से पीछे भाग जाने वालों में अन्तिम व्यक्ति लाला लाजपत राय जी हैं जो पंजाब के शेर कहलते थे। लाला जी जब अमेरिका में थे तो उनकी तेजस्विता और ...र्ण भावना भारत के हृदय में आशा ...य में निराशा पैदा करने व... ...ह नक्षत्र भारतीय गगन म... ...र पुनः उदय हुआ तो हमें बड़ी बड़ी आशाएँ थीं। पर वे सब व्यर्थ हुईं। नौकरशाही से प्रचण्ड युद्ध करने—अन्त समय तक लड़ने के स्थान पर लाला जी लड़खड़ाने और काँपने लगे; और अब अन्ततः एक दम झुक गए।

अमेरिका से वापिस आने पर लाला जी

असहयोग के दिनों में आप पूर्ण असहयोगी के रूप में क्षेत्र में उतरे; आज वे हम से कहते हैं कि मुझे विघ्न बाधा उपस्थित करने की नीति पर कभी विश्वास ही नहीं था। लाला जी ने राष्ट्रीय विद्यालय के प्रति उदासीनता प्रकट करके पंजाब प्रान्त में राष्ट्रीय शिक्षा पर प्राणान्तक आघात किया है। यह कितने खेद की बात है कि राष्ट्रभक्त उत्पादक संस्था का ऐसे सज्जन के हाथ से अन्त हो जो चारों ओर राष्ट्रीय शिक्षा का पुजारी समझा जाता है।

कानपुर में।

लालाजी को तो अपनी टांग सब जगह अड़ानी ही चाहिये इसीलिये ... उन्हें कानपुर में उदात्त स्वराजिस्ट के रूप ... हैं। अब ८ महीने तक स्वाराजिस्ट रहने के बाद लालाजी कहते हैं कि मैं स्वराज्य दल की नीति पर कभी विश्वास नहीं रखता था। जिन्हें लाला जी रंग पलट-नीति का पता नहीं है उन्हें इस कथन पर अवश्य आश्चर्य होगा। हमें यहाँ यह बात न भुला देनी चाहिये कि इस अर्से में लाला जी उस सरकार के मनोनीत सदस्य बनकर जेनेवा की सैर भी कर आये जिसकी आप सदा निन्दा किया करते थे।

जनेवा से लौट कर राष्ट्रभक्त लाजपत-

हैं। तुम ठीक रास्ता नहीं देख सकती हो। और यदि अटकल से तुमने रास्ता तलाश भी लिया तो तुम आगे बढ़ न सकोगी क्योंकि तुम्हारे लिए कोई रास्ता खाली नहीं कर सकता, तुम्हारे फन नहीं है तुम्हें कौन डरेगा। पर दुम के दिल में आगे बढ़नेकी धुन सवार थी, उसने एक न सुनी और तुरन्त चल पड़ी। बेचारे शिर राम को घसिटना पड़ा। [illegible] यहीं तक होता तो गनीमत [illegible] आँख की दुम ने साँप के सम्पूर्ण शरीर [illegible] लेजाकर एक गहरे कुएँ में गिरा दिया।

ठीक यही दशा आज भारतीय राजनीति की होने वाली है। जो दुम के समान सदैव पीछे लगे रहते थे आज कहते हैं हमें आगे चलने दो।

नरम दल, प्रतियोगी सहयोगी दल, स्वतंत्र दल तथा और भी जितने दल हैं, सब काँग्रेस की दुम ह। सदैव ही इनको पीछे चलना पड़ा है और पीछे चलने में ही इनका तथा देश का कल्याण है। पर जब ये नहीं मानते, आगे बढ़ना ही चाहते हैं तो बढ़ें पर हम इनसे यह पूछते हैं कि इनके पास वह दाँत कहाँ हैं जो नौकर शाही को चबा जायँगे, इनके वह आँखें कहाँ हैं जो दुश्मनों को देखेंगी और समझेंगी।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वराजपार्टी हमारी राजनीति का शिर है। जब जब वह फन काढ़ कर खड़ी हुई है नौकरशाही भय से काँप उठी है। बङ्गाल में देशबन्धु दास ने सरकार को नाकों चने चबवा दिए। उनके सिंहनाद से लार्डलिटन का सिंहासन हिल उठा। सी० पी० में तथा अन्य स्थानों में भी स्वराजदल ने गवर्नमेंट से जो मोर्चा लिया वह किसी से छिपा नहीं है। फिर भी यह दुमें जो आगे आना चाहती हैं साफ घोषणा कर रहीं हैं कि शिर के किये कुछ न होगा, हमें आगे बढ़ने दो, हम सारा काम बना लेंगी।

राजनीति कोई खिलौना नहीं है। यह है संग्राम भूमि। इसमें वीर और साहसी सिपाहियों की आवश्यकता है। ऐसे सिपाही हमें जहाँ से मिलें वहीं से लेना चाहिए। स्वराज माँगने से नहीं मिलेगा, जब मिलेगा युद्ध से ही मिलेगा। पाँडओं को एक सुई के नोक के बराबर भूमि भी माँगने से नहीं दी गई। वीर लड़ाकुओं के स्थान पर यदि हम भिखारियों को अपना प्रतिनिधि [illegible] एँगे तो इसके सिवाय कि हम दुरदुराए जायँ और कोई लाभ नहीं हो सकता।

राम, कृष्ण, अर्जुन, भीम आदि का हमारे हृदय में सम्मान है। हम जानते हैं हमारी इस भारत भूमि में कैसे कैसे वीर और साहसी आदर्श नर उत्पन्न हो चुके हैं। हम शिवाजी और राणा प्रताप के गीत गाते हैं। हम लोकमान्य तिलक के नाम का अभिमान करते हैं। पर हम यह नहीं देखते कि हम किधर जा रहे हैं। जिस गुलामी के गर्त से हम निकल चुके हैं उसी में फिर चलकर गिरने का आज राग अलापा जा रहा है। जो सुधार हुए हैं और जिनसे लाभ उठाने के लिए प्रतियोगी सहयोगी तथा स्वतंत्र आदि दल वाले लालायित हैं वे सुधार भी हमारे उसी शान्तिमय युद्ध के फल हैं जिसे हमने सन् २२ में ठान लिया था।

आगामी चुनाव में सरकार यह देखना चाहती है कि हममें कितना दम है। हम उससे अपनी स्वतंत्रता का युद्ध उसी प्रकार जारी रक्खेंगे या फिर उसकी जुआ में अपना सिर दे देंगे। आधी विजय प्राप्त कर लेने के बाद अब काम से मुख मोड़ लेना बुद्धिमानी नहीं है। जिसने जलियाँ वाले बाग में हमारे भोले भाले निहत्थे भाइयों को पेट के बल रेंगा रेंगा कर मारा, जिसने हमें आपस में लड़ा कर हिन्दू मुसलमानों की टूटी खोपड़ियों से अपनी रक्षा का बिल बनाया,

शाही से प्रचण्ड युद्ध करने—अन्त समय तक लड़ने के स्थान पर लाला जी लड़खड़ाने और काँपने लगे; और अब अन्ततः एक दम झुक गए।

अमेरिका से वापिस आने पर लाला जी की राजनीति क्षण क्षण में परिवर्तित होने वाली और असंगतता का पुलन्दा रही है। इन दिनों में जनता को लुभाने और सर्वजनप्रियता प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहे हैं।

किसका साथ देना चाहिए। स्वतंत्रता के सिंहासन पर बैठाने वाले शिर का या गुलामी के गर्त में गिरा देने वाली दुम का?

स्वराज्य पार्टी पर प्रहार

इस कठिन समय में जब कि शैतानी भावनाओं का चारों ओर ताण्डव नृत्य हो रहा है और पाखण्ड की बन आई है वह प्राणी धन्य है जो अपने को इनसे अलिप्त रख कर देश को इनसे बचाने की कोशिश करें। सङ्कुचित तथा कट्टर जातीय भावनाओं की लहरें माल[illegible] ष्ट्रीयता [illegible] रूप से [illegible] पार्टी पर [illegible] प्रहारों की कोई शिकायत [illegible] किसी वीर को होनी चाहिये। किन्तु [illegible] प्रहार जाँघ के नीचे हो रहा है। प्रतिद्वन्दी समझते हैं कि केवल राजनैतिक नीति के आधार पर निर्वाचन क्षेत्र पर उनका टिकना बिलकुल असम्भव है अतः भोली भाली जनता के जातीय भावनाओं को उत्तेजित कर के उसका दुरुपयोग किया जा रहा है। यह ईमानदारी का खेल नहीं है। यदि लड़ना ही है तो शौक से लड़िये पर खिसियाइये नहीं। और स्मरण रखिये उस भाँति आप को भी विजय लाभ नहीं मिलेगी। हाँ आप ग्रास की मदिका भले बन जायँ। स्वराजी मेरी दृढ़ धारणा है कम से अपनी

चाहिये कि इस अर्से में लाला जी उस सरकार के मनोनीत सदस्य बनकर जेनेवा की सैर भी कर आये जिसकी आप सदा निन्दा किया करते थे।

जनेवा से लौट कर राष्ट्रभक्त लाजपतराय, हिन्दू मुस्लिम एक के पुजारी लालपतराय तो अंतर्धान हो गये और उनके स्थान भर अब हिन्दू सभा के गहरे रङ्ग में रंगे हुए और सोलह आने माडरेट पंजाब केसरी प्रकट हुए हैं। क्या यह गर्व की बात नहीं है!

हिन्दू मुस्लिम एकता खतम करो, चर्खा एक ओर पटको! खद्दर उठा कर अलग रखो! राष्ट्रीय शिक्षा का अन्त करो! केवल अछूतोद्धार से स्वराज मिलेगा! केवल हिन्दू सङ्गठन से भारत स्वाधीन होगा! गवर्नमेंट से लड़ने की आवश्यकता नहीं है! सरकार के आगे हथियार डाल दो! आजकल लाला जी की यही विचार सारिणी है।

धीरे २ माता के प्राणों पर सङ्कट आ बना है। "क्या चिन्ता है माता मैं अभी लाजपतराय के पास दौड़कर जाता हूँ!" और [illegible] जाता हूँ! बहुत जल्दी [illegible] लगेंगे [illegible] लय केवल सन् १९२९ ई० में खुलेगा [illegible] धैर्य रख और उस समय तक सब्र कर इसके पूर्व कुछ नहीं हो सकता! कोई उपाय नहीं है।"

नवयुवको! किसी मनुष्य की पूजा न करो! सिद्धान्त के पुजारी बनो। कांग्रेस राष्ट्रीयता की प्रतिकृति है। आज वह घोर सङ्कट में है। बाहर से नौकरशाही और भीतर से हमारे रणपराङमुख भाई आक्रमण कर रहे हैं। आज वह आशापूर्ण नेत्रों से तुम्हारी ओर देख रही है।

राष्ट्रीय झण्डे के नीचे आजाओ। यह हमारी राष्ट्रीयता का निशान है। यह मातृ-

आँख की दुम ने साँप के सम्पूर्ण शरीर लेजाकर एक गहरे कुएँ में गिरा दिया।

ठीक यही दशा आज भारतीय राजनीति की होने वाली है। जो दुम के समान सदैव पीछे लगे रहते थे आज कहते हैं हमें आगे चलने दो।

नरम दल, प्रतियोगी सहयोगी दल, स्वतंत्र दल तथा और भी जितने दल हैं, सब काँग्रेस की दुम हैं। सदैव ही इनको पीछे चलना पड़ा है और पीछे चलने में ही इनका तथा देश का कल्याण है। पर जब ये नहीं मानते, आगे बढ़ना ही चाहते हैं तो बढ़ें पर हम इनसे यह पूछते हैं कि इनके पास वह दाँत कहाँ हैं जो नौकर शाही को चबा जायँगे, इनके वह आँखें कहाँ हैं जो दुश्मनों को देखेंगी और समझेंगी।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वराजपार्टी हमारी राजनीति का शिर है। जब जब वह फन काढ़ कर खड़ी हुई है नौकरशाही भय से काँप उठी है। बङ्गाल में देशबन्धु दास ने सरकार को नाकों चने चबवा दिए। उनके सिंहनाद से लार्डलिटन का सिंहासन हिल उठा। सी० पी० में तथा अन्य स्थानों में भी स्वराजदल ने गवर्नमेंट से जो मोर्चा लिया वह किसी से छिपा नहीं है। फिर भी यह दुमें जो आगे आना चाहती हैं साफ घोषणा कर रहीं हैं कि शिर के किये कुछ न होगा, हमें आगे बढ़ने दो, हम सारा काम बना लेंगी।

इस समय देश के सामने जो सब से बिकट समस्या है वह यही है कि किसको आगे बढ़ने देना ठीक है। स्वराजिस्टस् को या अन्य दल वालों को। स्वराज दल एक निर्भय दल है, उसमें हिम्मत है, लाग है। उसमें ऐसे ऐसे आदमी हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व स्वदेश के लिए त्याग दिया है, अपने जीवन को ऐसा बना लिया है कि चाहे जिस पड़ेगे तो इसके सिवाय कि हम दुरदुराए जायँ और कोई लाभ नहीं हो सकता।

राम, कृष्ण, अर्जुन, भीम आदि का हमारे हृदय में सम्मान है। हम जानते हैं हमारी इस भारत भूमि में कैसे कैसे वीर और साहसी आदर्श नर उत्पन्न हो चुके हैं। हम शिवाजी और राणा प्रताप के गीत गाते हैं। हम लोकमान्य तिलक के नाम का अभिमान करते हैं। पर हम यह नहीं देखते कि हम किधर जा रहे हैं। जिस गुलामी के गर्त से हम निकल चुके हैं उसी में फिर चलकर गिरने का आज राग अलापा जा रहा है। जो सुधार हुए हैं और जिनसे लाभ उठाने के लिए प्रतियोगी सहयोगी तथा स्वतंत्र आदि दल वाले लालायित हैं वे सुधार भी हमारे उसी शान्तिमय युद्ध के फल हैं जिसे हमने सन् २२ में टाल दिया था।

आगामी चुनाव में सरकार यह देखना चाहती है कि हममें कितना दम है। हम उससे अपनी स्वतंत्रता का युद्ध उसी प्रकार जारी रक्खेंगे या फिर उसकी जुआ में अपना सिर दे देंगे। आधी विजय प्राप्त कर लेने के बाद अब काम से मुख मोड़ लेना बुद्धि मानी नहीं है। जिसने जलियाँ वाले बाग में हमारे भोले भाले निहत्थे भाइयों को पेट के बल रेंगा रेंगा कर मारा, जिसने हमें आपस में लड़ा कर हिन्दू मुसलमानों की टूटी खोपड़ियों से अपनी रक्षा का बिल बनाया, जिसके जेल में हमारे राज नैतिक कैदी अब तक सड़ रहे हैं उससे सहयोग करना लिबरलों की, देशद्रोहियों की नीति है। इस नीति से हमें सब कुछ मिल सकता है पर उसी को छोड़ कर जो हम चाहते हैं। अन्यथा हम स्वराज नहीं पा सकते।

अब इस बात का निर्णय हम अपने देश वासियों के ही ऊपर छोड़ते हैं कि हमें किसका साथ देना चाहिए। स्वतंत्रता के सिंहासन पर बैठाने वाले शिर का या गुलामी के गर्त में गिरा देने वाली दुम का?

स्वराज्य पार्टी पर प्रहार

इस कठिन समय में जब कि शैतानी भावनाओं का चारों ओर ताण्डव नृत्य हो रहा है और पाखण्ड की बन आई है वह प्राणी धन्य है जो अपने को इनसे अलिप्त रख कर देश को इनसे बचाने की कोशिश करें। सङ्कुचित तथा कट्टर जातीय भावनाओं की लहरें माल[illegible] राष्ट्रीयता [illegible] रूप से नि[illegible] पार्टी पर [illegible] प्रहारों की कोइ शिकायत [illegible] किसी वीर को होनी चाहिये। किन्तु [illegible] प्रहार जाँघ के नीचे हो रहा है। प्रतिद्वन्दी समझते हैं कि केवल राजनैतिक नीति के आधार पर निर्वाचन क्षेत्र पर उनका टिकना बिलकुल असम्भव है अतः भोली भाली जनता के जातीय भावनाओं को उत्तेजित कर के उसका दुरुपयोग किया जा रहा है। यह ईमानदारी का खेल नहीं है। यदि लड़ना ही है तो शौक से लड़िये पर खिसियाइये नहीं। और स्मरण रखिये उस भाँति आप को भी विजय लाभ नहीं मिलेगी। हाँ आप ग्रास की मक्षिका भले बन जायँ। स्वराजी मेरी दृढ़ धारणा है कम से अपनी उस शक्ति से चुनाव में अवश्य पहुंचेंगे जैसे पहिले पहुँचे थे। हाँ इस प्रकार से वह जिस शक्ति को बढ़ा कर सरकार का लोहा लेना चाहते थे नहीं ले सके। यदि ऐसी स्थिति पैदा कर देना ही हिन्दू भक्ति है तो भाई इस भक्ति को दूर से नमस्कार है।

रामचन्द्र शर्मा।

—oo—

नहीं है!

हिन्दू मुस्लिम एकता खतम करो, चर्खा एक ओर पटको! खद्दर उठा कर अलग रखो! राष्ट्रीय शिक्षा का अन्त करो! केवल अछूतोद्धार से स्वराज मिलेगा! केवल हिन्दू सङ्गठन से भारत स्वाधीन होगा! गवर्नमेंट से लड़ने की आवश्यकता नहीं है! सरकार के आगे हथियार डाल दो! आजकल लाला जी की यही विचार सारिणी है।

धीरे २ माता के प्राणों पर सङ्कट आ बना है। "क्या चिन्ता हैं माता मैं अभी [illegible]राय के पास दौड़कर जाता हूँ!" और [illegible] जाता हूँ! बहुत जल्दी [illegible] लगेंगे। [illegible] महौषध [illegible]लय केवल सन् १९२९ ई० [illegible] रख और उस समय तक सब्र कर इसके पूर्व कुछ नहीं हो सकता! कोई उपाय नहीं है।"

नवयुवको! किसी मनुष्य की पूजा न करो! सिद्धान्त के पुजारी बनो। कांग्रेस राष्ट्रीयता की प्रतिकृति है। आज वह घोर सङ्कट में है। बाहर से नौकरशाही और भीतर से हमारे स्वपरामुख भाई आक्रमण कर रहे हैं। आज वह आशापूर्ण नेत्रों से तुम्हारी ओर देख रही है।

राष्ट्रीय झण्डे के नीचे आजाओ। यह हमारी राष्ट्रीयता का निशान है। यह मातृभूमि का मन्दिर है। तुम्हें मातृद्रोह न करना चाहिये मातृद्रोह कोई नहीं करता, कोई नहीं कर सकता। नवयुवक देशभक्तों! माता की पुकार सुनो! वह त्याग उत्सर्ग आत्मनिग्रह और कष्ट सहन के लिये तुम्हें पुकार रही है।